Prabhat Khabar (Date: - 31/07/2019)

एक्स्ट्रा एक्टिविटीज

छात्राएं पढ़ाई के साथ-साथ सिंगिंग के क्षेत्र में भी बना रही हैं अपनी पहचान

अपनी आवाज से लोगों का दिल जीत रहीं बेटियां

जुही स्मिता@पटना

बच्चों की पढ़ाई-लिखाई और अन्य गतिविधियों पर पहले माता-पिता की इच्छाएं हावी रहती थीं. बच्चों को न चाहते हुए भी माता-पिता के सोच के अनुरूप काम करना पड़ता था. मगर बदलते वक्त के साथ-साथ माता-पिता का सोच भी बदला है. अब पैरेंट्स बच्चों को उनकी रुचि के अनुसार काम करने दे रहे हैं. शहर के विभिन्न कॉलेजों में पढ़ने वाली और पास आउट छात्राएं अपने जोश, जूनून और जज्बे के दम पर कामयाबी की सीढ़ियां चढ़ रही हैं. पेश है एक रिपोर्ट.

पैरेंट्स का मिल रहा सपोर्ट

गाने का शौक तो बचपन से था, लेकिन यह जुनून में कब बदल गया पता ही नहीं चला. खगौल की रहने वाली वागिशा झा बताती है कि वे जेडी वीमेंस कॉलेज में म्यूजिक से एमए कर रही है. वागिशा बताती है कि पांच साल की उम्र में पिताजी जय मुकुंद झा मेरे पहले गुरु बने. इसके बाद मैंने संजीत सर और पंडित शशि तिवारी से आगे का गायन सीखा. मै बिग टीवी गंगा के सारेगामापा पुरवइया की रनर अप रह चुकी हूं. 2014 में कराओके सिंगिंग स्टार की प्रतिभागी और 2015 में बेस्ट सिंगिंग अवार्ड भी मिल चुका है. मै बिहार महोत्सव, समस्तीपुर महोत्सव, यूनिवर्सिटी का कार्यक्रम तरंग के अलावा कॉलेज में होने वाले कई इवेंट्स में भाग ले चुकी हूं.

किलकारी से मिली प्रेरणा

कांटी फैक्टरी की रहने वाली रानी सिंह श्री अरविंद महिला कॉलेज में सोशियोलॉजी विभाग की फाइनल इयर की छात्रा है. पढ़ाई के अलावा सिंगिंग में अपनी एक पहचान बना चुकीं प्रेरणा कहती है कि मै पिछले पांच सालों से संगीत सीख रही हूं. किलकारी से मैंने साधना मैम से सिंगिंग की शुरुआत की. मैथिली सिंगर रंजना झा से मिली तो मैंने सोच लिया कि मुझे भी फोक सिंगर बनना है. स्ट्रगल के दिनों में मेरे मेंटर वरुण कुमार सिंह ने मुझे प्लेटफॉर्म दिलाया. आज मै शहर में आयोजित होनेवाले विभिन्न महोत्सव से लेकर प्राइवेट शोज में गाती हूं. मैंने बिहार दिवस, दशहरा महोत्सव, सोनपुर महोत्सव, वैशाली और राजगीर महोत्सव में लोकगीत गाया है.

प्लेबैक सिंगर बनना सपना

खगौल की रहने वाली कजरी बताती है कि मैंने टेंथ बोर्ड के बाद से म्यूजिक सीखना शुरू किया. मेरी फैमिली म्यूजिक से जुड़ी हुई है और म्यूजिक मेरे खून में है. मम्मी बताती है कि मैंने चार साल की उम्र से ही गाना शुरू कर दिया था. यह कहना गलत नहीं होगा कि मैंने म्यूजिक के अलावा अपना करियर किसी भी फील्ड में नहीं सोचा. मेरे लिए हर सिंगर प्रेरणा के स्रोत है. किसी एक का नाम लेना मुश्किल है. इसी साल मै मगध महिला कॉलेज से म्यूजिक में ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर चुकी हूं. कॉलेज में मै गोल्ड मेडलिस्ट भी रही हूं. यहां म्यूजिक को लेकर ज्यादा स्कोप नहीं है यही वजह है कि मै अपनी आगे की पढ़ाई से दिल्ली से पूरी करूंगी.

मां और बहन का मिला सपोर्ट

कदकुआं की रहने वाली शुभ्रा रानी बचपन से ही काफी टैलेंटेड है. उनका टैलेंट न सिर्फ गीत-संगीत में दिखता है बल्कि पढ़ाई में भी अव्वल रहती है. शुभ्रा बताती है कि पढ़ाई के साथ-साथ मै गाना भी गाती थी और एंकरिंग भी करती थी. मेरे इसी उत्साह की वजह से मुझे छठी कक्षा में दूरदर्शन के कार्यक्रम में एंकरिंग करने का मौका मिला. पढ़ाई समाप्त करने के बाद प्राचीन कला केंद्र से वोकल क्लासिकल सिंगिंग सीखा. 2007 में जी टीवी के शो सारेगामापा लिटिल चैंप में टॉप 24 प्रतिभागियों में रही. कॉलेज के दौरान मैंने कई संस्थानों में होने वाले फेस्ट और प्रतियोगिताओं में पार्टिसिपेट किया.